International Journal of Sociology and Humanities

**ISSN Print:** 2664-8679
**ISSN Online:** 2664-8687
**Impact Factor:** RJIF 8
IJSH 2023; 5(2): 17-29
www.sociologyjournal.net
Received: 13-06-2023
Accepted: 14-07-2023

**डॉ दीपक कुमार दिनकर**
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, सुन्दरवती महिला महाविद्यालय, भागलपुर तिलका माँझी भागलपुर, विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ दीपक कुमार दिनकर**
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, सुन्दरवती महिला महाविद्यालय, भागलपुर तिलका माँझी भागलपुर, विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

# हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत की सामरिक रणनीति : क्वाड के विशेष संदर्भ में

## डॉ दीपक कुमार दिनकर

**DOI:** https://dx.doi.org/10.33545/26648679.2023.v5.i2a.54

**सारांश**

हिंद महासागर और प्रशांत महासागर क्षेत्र के कुछ भागों को अंतर्राष्ट्रीय भू-राजनीति के अध्ययन विषय में संयुक्त रूप से हिंद-प्रशांत क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र इकीसवीं सदी में भू-राजनीतिक क्षेत्र में विश्व की विभिन्न शक्तियों के मध्य कूटनीति एवं संघर्ष का मुख्य केंद्र बन गया है। इसका कारण यह है की हिंद महासागर और प्रशांत महासागर समुद्री मार्ग प्रदान करता है। दुनिया का अधिकांश व्यापारिक गतिविधियाँ इन दोनों महासागरों के माध्यम से होता है। भारत-प्रशांत क्षेत्र दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले और आर्थिक रूप से सक्रिय क्षेत्रों में से एक है जिसमें चार महाद्वीप शामिल हैं: एशिया, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका। हिंद-प्रशांत क्षेत्र की गतिशीलता और जीवन शक्ति स्वयं स्पष्ट है, दुनिया की 60% आबादी और वैश्विक आर्थिक उत्पादन का 2/3 भाग इस क्षेत्र को वैश्विक आर्थिक केंद्र बनाता है। यह क्षेत्र प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का एक बड़ा स्रोत और गंतव्य भी है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र दुनिया की कई महत्त्वपूर्ण एवं बड़ी आपूर्ति शृंखलाओं संबंधित है। भारतीय और प्रशांत महासागरों में संयुक्त रूप से समुद्री संसाधनों का विशाल भंडार है, जिसमें अपतटीय हाइड्रोकार्बन, मीथेन हाइड्रेट्स, समुद्री खनिज और पृथ्वी की दुर्लभ धातु शामिल हैं। बड़े समुद्र तट और अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZ) इन संसाधनों के दोहन के लिये तटीय देशों को प्रतिस्पर्द्धी क्षमता प्रदान करते हैं। दुनिया की कई सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएँ हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थित हैं, जिनमें भारत, यू.एस.ए, चीन, जापान, ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं।

क्वाड को 'स्वतंत्र, खुले और समृद्ध' हिंद-प्रशांत क्षेत्र को सुरक्षित करने के लिये चार देशों के साझा उद्देश्य के रूप में पहचाना जाता है। क्वाड भारत, अमेरिका, जापान तथा ऑस्ट्रेलिया की संयुक्त रूप से अनौपचारिक रणनीतिक वार्ता है। 13वीं ईस्ट एशिया समिट के दौरान ही क्वाड सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था। यह क्वाड सम्मेलन मुख्यत: इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में अवसंरचनात्मक परियोजनाओं एवं समुद्री सुरक्षा योजनाओं पर केंद्रित था। यद्यपि समूह का घोषित लक्ष्य हिंद-प्रशांत क्षेत्र की समृद्धि व खुलेपन से संबंधित है, किंतु इसका मुख्य लक्ष्य बेल्ट रोड पहल के माध्यम से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीनी दबदबे को नियंत्रित करना है।

**कूटशब्द:** हिंदप्रशांत क्षेत्र-, भूराजनीति-, राष्ट्रीय हित, क्वाड, समुद्री सुरक्षा, आर्थिक गतिविधि, आपूर्ति शृंखला, सामरिक रणनीति

## 1. प्रस्तावना

1. हिंद और प्रशांत महासागर की बढ़ती अहमियत ने “हिंद-प्रशांत” क्षेत्र को एक भू-रणनीतिक आयाम के रूप में नई गति दी है और यही वजह है कि 21वीं सदी के ज़्यादातर समय के लिए हिंद-प्रशांत क्षेत्र वैश्विक राजनीति के स्वरूप को आकार देगा। यह वह क्षेत्र है जहां दुनिया की महान शक्तियों के बीच (ख़ास तौर पर संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) और चीन के बीच) प्रतिस्पर्धा जारी है। यह वह क्षेत्र है जहां दुनिया की कुछ सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी नज़र आती हैं। चीन की संदिग्ध नीतियां और आक्रामक विस्तारवादी प्रवृत्तियां जिसके चलते हिंद-प्रशांत क्षेत्र से जुड़े लगभग सभी मुल्कों के हित बाधित हो रहे हैं। इसे देखते हुए अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान, ब्रिटेन, और यूरोपियन यूनियन जैसी विश्व की सभी प्रमुख शक्तियां हिंद-प्रशांत क्षेत्र को अपनी विदेश, रक्षा और सुरक्षा नीतियों का केंद्र बना रही हैं, तो ऐसे में इस क्षेत्र की बढ़ती अहमियत को समझा जा सकता है (राजागोपालन 2020, पृष्ठ संख्या-80)।

a. इसमें दो राय नहीं कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र वो आधार है जिसके चारों ओर कई मुल्क अपनी नीतियों को फिर से स्थापित और जोड़ने में लगे हैं। सितंबर 2021 के दौरान वाशिंगटन डीसी में आयोजित अपने शिखर सम्मेलन में चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (क्वाड) के नेताओं ने जलवायु संकट; उभरती हुई प्रौद्योगिकियों, अंतरिक्ष, साइबर सुरक्षा; और अगली-पीढ़ी की प्रतिभा को विकसित करने के क्षेत्रों में सहयोग के अपने दायरे का विस्तार किया। इस शिखर सम्मेलन के दौरान नेताओं ने एक स्वतंत्र और खुले, समृद्ध और समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्र को सुनिश्चित करने का संकल्प लिया।

b. क्वाड शब्द "क्वाड्रीलेटरल सुरक्षा वार्ता" के क्वाड्रीलेटरल (चतुर्भुज) से लिया गया है। इस समूह में भारत के साथ अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं. क्वाड जैसे समूह को बनाने की बात पहली बार 2004 की सुनामी के बाद हुई थी, जब भारत ने अपने और अन्य प्रभावित पड़ोसी देशों के लिए बचाव और राहत के प्रयास किए और इसमें अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान भी शामिल हो गए थे। लेकिन इस आइडिया का श्रेय जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंज़ो आबे को दिया जाता है। वर्ष 2006 और 2007 के बीच आबे क्वाड की नींव रखने में कामयाब हुए और चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता की पहली अनौपचारिक बैठक वरिष्ठ अधिकारीयों के स्तर पर अगस्त 2007 में मनीला में आयोजित की गई। उसी साल क्वाड के चार देशों और सिंगापुर ने मालाबार के नाम से बंगाल की खाड़ी में एक नौसैनिक अभ्यास में हिस्सा लिया था (चौधरी 2018, पृष्ठ संख्या-185)। इस सब पर चीन ने तीखी प्रतिक्रिया देते हुए क्वाड देशों से यह बताने को कहा था कि क्या क्वाड एक बीजिंग विरोधी गठबंधन है? क्वाड को एक झटका और लगा जब कुछ समय बाद ही ऑस्ट्रेलिया इससे अलग हो गया।

c. दस साल बाद वर्ष 2017 में मनीला में आसियान शिखर सम्मेलन के दौरान 'भारत-ऑस्ट्रेलिया-जापान-अमेरिका' संवाद के साथ क्वाड वापस अस्तित्व में आया. यह बैठक इन देशों के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के मनीला पहुँचने से कुछ घंटे पहले हुई. यह वार्ता इस दृष्टि से भी

महत्वपूर्ण थी कि उस समय भारत और चीन के बीच डोकलाम में गतिरोध चल रहा था। वर्ष 2017 में गति मिलने के बाद क्वाड के विदेश मंत्री अक्टूबर 2020 में टोक्यो में मिले और कुछ ही महीनों बाद इस साल मार्च में जो बाइडेन के अमेरिकी राष्ट्रपति बनने के कुछ ही हफ़्तों बाद अमेरिका ने क्वाड के वर्चुअल शिखर सम्मलेन की मेज़बानी की। क्वाड सदस्यों के साथ अपने वर्तमान आर्थिक जुड़ाव को ध्यान में रखते हुए, क्वाड से भारत को आर्थिक लाभ हो सकता है।

d. ये लाभ विशेष रूप से पाँच अलग-अलग क्षेत्रों में अर्जित किए जा सकते हैं।

क्वाड नेताओं ने अपने संयुक्त बयान में स्वीकार किया कि-हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और सेवाओं के लिए-विविध और सुरक्षित प्रौद्योगिकी आपूर्ति श्रृंखला उनके साझा राष्ट्रीय हितों के लिए महत्वपूर्ण हैं। सेमी कंडक्टर के उत्पादन में आत्मनिर्भरता विकसित करना क्वाड राष्ट्रों के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। भारत, देश में उत्पादन संयंत्र स्थापित करने के लिए वैश्विक फर्मों को प्रोत्साहन की पेशकश करके स्थानीय सेमीकंडक्टर निर्माण क्षमताओं का निर्माण करने का प्रयास करता है जिसका उपयोग स्थानीय बाजार में सिलिकॉन चिप्स की आपूर्ति के साथ-साथ वैश्विक आपूर्ति के लिए आधार बनने के लिए किया जा सकता है (पंत 2018, पृष्ठ संख्या-55)।

e. क्वालकॉम के सीईओ के साथ अपनी बैठक में प्रधान मंत्री मोदी ने 5जी दूरसंचार नेटवर्क में उपयोग किए जाने वाले चिप्स जैसे क्षेत्रों में अपने भारत के निवेश को बढ़ाने का आग्रह किया। भारत सेमीकंडक्टरों और उनके महत्वपूर्ण घटकों के लिए आपूर्ति-श्रृंखला सुरक्षा शुरू करने के लिए क्वाड की महत्वाकांक्षा का समर्थन कर सकता है। भारत क्वाड सदस्यों के साथ भारत में अपने उत्पादन संयंत्र स्थापित करने के लिए काम कर सकता है। प्रशिक्षित मानव पूँजी में भारत में तुलनात्मक सुविधा है। सेमीकंडक्टर डिजाइन के लिए बड़ी संख्या में कुशल इंजीनियरों की आवश्यकता होती है और यहीं भारत की ताकत है। क्वाड नेताओं ने भविष्य के 5जी दूरसंचार पारिस्थितिकी तंत्र को 'विविध, लचीला और सुरक्षित' रखने की आवश्यकता पर बल दिया। सभी क्वाड सदस्यों ने चीनी कंपनियों पर, सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए या अपने घरेलू मुद्दों में उनके हस्तक्षेप के डर से उनकी 5जी तकनीक का परीक्षण करने पर प्रतिबंध लगा दिया है।

2. भारत में कई कंपनियाँ पहले से ही अपनी 5जी तकनीक विकसित करने के लिए अग्रिम चरण में हैं। भारत आईटीईएस में अपनी तुलनात्मक ताकत का इस्तेमाल कर सकता है और स्थिति का अपने पक्ष में फायदा उठा सकता है। सभी क्वाड अर्थव्यवस्थाएँ दुर्लभ पृथ्वी सहित कई आवश्यक और महत्वपूर्ण खनिजों के लिए चीन पर अत्यधिक निर्भर हैं। दुर्लभ पृथ्वी धातु में सामूहिक रूप से 17 तत्वों का एक अपेक्षाकृत सीमित समूह शामिल है, जिसमें आवर्त सारणी पर 15 लैंथेनाइड तत्व और दो अन्य संबंधित तत्व, स्कैंडियम और यट्रियम शामिल हैं। स्मार्ट फोन, लैपटॉप, हाइब्रिड कार, विंड टर्बाइन और सोलर सेल सहित सभी तरह के उच्च तकनीक वाले सामानों में, अन्य चीजों के अलावा, धातुएँ आवश्यक तत्व हैं। दुर्लभ पृथ्वी की आपूर्ति को बाधित करने की चीन की धमकी के कारण, संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान दोनों ने अतीत में एक विकट स्थिति का अनुभव किया है। भारत के पास इस खनिज के वैश्विक भंडार का छह प्रतिशत है, और वह इस संबंध

में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की क्षमता रखता है। जापानी फर्म टोयोटा त्सुशो ने इंडियन रेयर अर्थ लिमिटेड के साथ, आंध्र प्रदेश में टोयोत्सु रेयर अर्थ्स इंडिया नामक एक संयुक्त उद्यम की स्थापना की, जो कि नियोडिमियम, लैंथेनम और सेरियम जैसी दुर्लभ पृथ्वी बनाने के लिए है।

a. भारत को क्वाड देशों के साथ सहयोग करना चाहिए और इस खनिज का निर्यात करना चाहिए।

क्वाड अर्थव्यवस्थाओं के साथ भारत का गहरा आर्थिक संबंध प्रत्येक सदस्य के साथ इसके द्विपक्षीय व्यापार की मात्रा में परिलक्षित होता है। 2019-2020 के दौरान भारत के कुल व्यापार का 15 प्रतिशत हिस्सा, सामूहिक रूप से इन तीन अर्थव्यवस्थाओं का था। 11 प्रतिशत के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका का सबसे अधिक हिस्सा है, उसके बाद जापान और ऑस्ट्रेलिया का हिस्सा क्रमशः 2.15 प्रतिशत और 1.6 है। इसके अलावा, भारत का पहले से ही जापान के साथ एक व्यापार समझौता है, जिसे 2011 में लागू किया गया था, जबकि ऑस्ट्रेलिया और यूएसए के साथ बातचीत चल रही है। भारत अब इस महत्वपूर्ण बहुपक्षीय मंच का उपयोग अपनी व्यापार वार्ता में तेजी लाने और सदस्य अर्थव्यवस्थाओं के साथ अपने व्यापार को बढ़ावा देने के लिए कर सकता है।

b. क्वाड का उद्देश्य भारत-प्रशांत क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण बुनियादी ढाँचे के निर्माण के लिए सार्वजनिक और निजी दोनों संसाधनों का उपयोग करना है। वर्ष 2015 से, क्वाड भागीदारों ने इस क्षेत्र में बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए 48 बिलियन डॉलर से अधिक का वित्त प्रदान किया है। भारत ने राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन (एनआईपी) के एक हिस्से के रूप में 2019-23 के दौरान बुनियादी ढाँचे पर 1.4 ट्रिलियन डॉलर खर्च करने की योजना बनाई है। जापान की विश्व स्तरीय निर्माण कंपनियाँ उन्नत तकनीक के साथ, बुनियादी ढाँचा वित्त एजेंसियाँ इस क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा सकती हैं।

3. दिलचस्प बात यह है कि जापान पहले ही भारत में पूर्वोत्तर राज्यों में परिवहन अवसंरचना के विकास में निवेश कर चुका है। मौजूदा ' ऑस्ट्रेलिया-जापान-अमेरिका त्रिपक्षीय अवसंरचना साझेदारी' में भारत को शामिल करके और भारत-प्रशांत क्षेत्र में अपनी पहुँच बढ़ाकर इस क्षेत्र में ढाँचागत विकास के लिए क्वाड की प्रतिबद्धता का विस्तार किया जा सकता है। क्वाड के साथ अपने जुड़ाव से भारत लाभान्वित हो सकता है। यह न केवल भारत-प्रशांत क्षेत्र में अपने रणनीतिक और राजनयिक महत्व का विस्तार करेगा बल्कि भारी आर्थिक लाभ भी अर्जित करेगा। ऐसा होने के लिए प्रतिभागियों के बीच घनिष्ठ और निरंतर समन्वय की आवश्यकता है। अब, यह देखा जाना बाकी है कि निकट भविष्य में उनके बीच का जुड़ाव किस रूप में सामने आता है और वे एक स्वतंत्र, खुले, समृद्ध और समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्र को प्राप्त करने के अपने लक्ष्य को कितनी सक्रियता से आगे बढ़ाते हैं (मनजीत 2021, पृष्ठ संख्या-78)।

## 4. क्वाड के माध्यम से भारत की हिंद-प्रशांत क्षेत्र में गतिशीलता

a. क्वाड समूह की शुरुआत दिसंबर 2004 में हिंद महासागर में आई सुनामी के बाद राहत कार्यों के लिये गठित 'सुनामी कोर ग्रुप' से जोड़कर देखी जाती है, जिसमें इस समूह के चारों देशों ने मिलकर राहत कार्यों में योगदान दिया था। क्वाड की अवधारणा औपचारिक रूप से सबसे पहले वर्ष 2007 में जापान के पूर्व प्रधानमंत्री

शिंज़ो आबे द्वारा प्रस्तुत की गई थी, हालाँकि चीन के दबाव में ऑस्ट्रेलिया के पीछे हटने से इसे आगे नहीं बढ़ाया जा सका। वर्ष 2012 में शिंज़ो आबे द्वारा हिंद महासागर से प्रशांत महासागर तक समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये ऑस्ट्रेलिया, भारत, जापान और अमेरिका को शामिल करते हुए एक 'डेमोक्रेटिक सिक्योरिटी डायमंड' (Democratic Security Diamond) स्थापित करने का विचार प्रस्तुत किया गया। नवंबर 2017 में हिंद-प्रशांत क्षेत्र को किसी बाहरी शक्ति (विशेषकर चीन) के प्रभाव से मुक्त रखने हेतु नई रणनीति बनाने के लिये 'क्वाड' समूह की स्थापना की और आसियान शिखर सम्मेलन के एक दिन पहले इसकी पहली बैठक का आयोजन किया गया।

b. मालाबार नौसैनिक अभ्यास भारत-अमेरिका-जापान की नौसेनाओं के बीच वार्षिक रूप से आयोजित किया जाने वाला एक त्रिपक्षीय सैन्य अभ्यास है। मालाबार नौसैनिक अभ्यास की शुरुआत भारत और अमेरिका के बीच वर्ष 1992 में एक द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास के रूप में हुई थी। वर्ष 2015 में इस अभ्यास में जापान के शामिल होने के बाद से यह एक त्रिपक्षीय सैन्य अभ्यास बन गया। ऑस्ट्रेलिया के इस सैन्य अभ्यास में शामिल होने के बाद यह हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने में क्वाड समूह की क्षमता में वृद्धि करेगा (पंत 2022, पृष्ठ संख्या-70)।

c. भारत की क्वाड- भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान का एक समूह है। सभी चारों राष्ट्र लोकतांत्रिक होने के कारण इनकी एक सामान आधारभूमि हैं और निर्बाध समुद्री व्यापार और सुरक्षा के साझा हित का भी समर्थन करते हैं। इसका उद्देश्य "मुक्त, स्पष्ट और समृद्ध" इंडो-पैसिफिक क्षेत्र सुनिश्चित करना तथा उसका समर्थन करना है। क्वाड का विचार पहली बार वर्ष 2007 में जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने रखा था। हालाँकि यह विचार आगे विकसित नहीं हो सका, क्योंकि चीन के ऑस्ट्रेलिया पर दबाव के कारण ऑस्ट्रेलिया ने स्वयं को इससे दूर कर लिया। अंतत: वर्ष 2017 में भारत, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका और जापान ने एक साथ आकर इस "चतुर्भुज" गठबंधन का गठन किया।

d. हाल के वर्षों में वैश्विक राजनीति में भारत की स्थिति में मज़बूती के साथ आर्थिक वैश्वीकरण पर विश्व की बड़ी शक्तियों में मतभेद और अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध के साथ विश्व व्यवस्था में बड़े बदलाव देखने को मिले हैं। पिछले कुछ वर्षों में दक्षिण एशिया में चीन की आक्रामकता में वृद्धि और विश्व के विभिन्न हिस्सों में चीन द्वारा बेल्ट और रोड इनिशिएटिव (BRI) तथा अपने सैन्य अड्डों की स्थापना के ज़रिये अपनी शक्ति में विस्तार के प्रयासों ने भारत सहित विश्व के अधिकांश देशों के लिये एक नई चुनौती उत्पन्न की है।

e. द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् स्थापित अमेरिकी नेतृत्त्व वाली वैश्विक व्यवस्था को कमज़ोर करने के प्रयासों में चीन की आक्रामकता को देखते हुए अमेरिका के दोनों प्रमुख राजनीतिक दलों ने वैश्विक संस्थानों में बड़े बदलाव पर सहमति व्यक्त की है। इसी विचार के तहत अमेरिकी राष्ट्रपति ने हाल ही में G-7 समूह का विस्तार करते हुए ऑस्ट्रेलिया, भारत, रूस और दक्षिण कोरिया को इस समूह में शामिल करने का प्रस्ताव रखा था। पिछले कुछ महीनों में अमेरिकी राष्ट्रपति ने एक 'क्लीन नेटवर्क' (Clean Network) की पहल पर विशेष ज़ोर दिया है, जिसके तहत दूर संचार प्रणाली, डिज़िटल एप, समुद्री केबल और क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर से अविश्वसनीय

सेवाप्रदाताओं को बाहर करने की बात कही गई है। इसकी शुरुआत चीनी दूरसंचार कंपनी हुवेई (Huawei) जैसे आपूर्तिकर्त्ताओं पर कार्रवाई के साथ हुई परंतु वर्तमान में यह समान विचारधारा वाले देशों के बीच सुरक्षित प्रौद्योगिकी पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के लिये एक व्यापक प्रयास के रूप में उभरा है।

f. भारत दक्षिण एशिया में एक बड़ा बाज़ार होने के साथ हाल के वर्षों में स्वास्थ्य, रक्षा और प्रौद्योगिकी जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में एक बड़ी शक्ति बनकर उभरा है। अमेरिका क्वाड की संभावनाओं को रक्षा सहयोग से आगे भी देखता है, इसी माह 'फाइव आइज़' (Five Eyes) नामक सूचना गठबंधन में भारत को शामिल करने के प्रस्ताव को इसके एक उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। हाल ही में अमेरिका के प्रस्ताव पर COVID-19 महामारी से निपटने हेतु समन्वित प्रयासों के लिये 'क्वाड प्लस (Quad Plus) संवाद '(ब्राज़ील, इज़रायल, न्यूज़ीलैंड, दक्षिण कोरिया और वियतनाम को शामिल करते हुए) की शुरुआत की गई। ब्रिटेन द्वारा भारत सहित विश्व के 10 लोकतांत्रिक देशों के साथ मिलकर एक गठबंधन बनाने पर विचार किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य चीन पर निर्भरता को कम करते हुए इन देशों के योगदान से एक सुरक्षित 5जी (5G) नेटवर्क का निर्माण करना है। भारत द्वारा चीन पर अपनी निर्भरता को कम करने के लिये जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर मज़बूत आपूर्ति शृंखला को विकसित करने पर कार्य किया जा रहा है।

g. भारत के अन्य सीमा विवादों (पाकिस्तान और चीन के संदर्भ में) की अनिश्चितता के विपरीत हिंद महासागर में भारत क्वाड सदस्यों के साथ मिलकर एक नई व्यवस्था स्थापित कर सकता है। वैश्विक व्यापार की दृष्टि से हिंद महासागर का समुद्री मार्ग चीन के लिये बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, ऐसे में इस क्षेत्र में क्वाड का सहयोग भारत को एक रणनीतिक बढ़त प्रदान करेगा। इसका उपयोग भारत इस क्षेत्र की शांति के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर चीन की आक्रामकता को नियंत्रित करने के लिये कर सकेगा। पिछले कुछ वर्षों में हिंद-प्रशांत के संदर्भ में विश्व के अनेक देशों की सक्रियता बढ़ी है, ध्यातव्य है कि हाल ही में फ्राँस और जर्मनी आदि देशों ने अपनी हिंद-प्रशांत रणनीति जारी की है। हिंद-प्रशांत के केंद्र में रहते हुए भारत इन प्रयासों के साथ मानवीय सहायता, आपदा प्रबंधन, समुद्री निगरानी और क्षेत्र के कमज़ोर देशों में अवसंरचना से जुड़ी साझा पहलों की शुरुआत कर वैश्विक राजनीति में अपनी स्थिति को मज़बूत कर सकता है।

## 5. हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत की सामरिक रणनीति

a. भारत एक स्वतंत्र और मुक्त हिंद-प्रशांत क्षेत्र की हमेशा से वकालत करता रहा है. अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और आसियान के सभी सदस्यों ने एक साथ यह विचार आगे रखा है कि इस क्षेत्र में भारत को एक बड़ी भूमिक निभानी चाहिए। अपने दायरे में भारत, हिंद-प्रशांत क्षेत्र को एक भौगोलिक और रणनीतिक विस्तार, जिसमें दो महासागर को जोड़ने वाले 10 आसियान देश हैं, के रूप में मानता है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र को लेकर भारत की अवधारणा में "समावेशिता, खुलापन, और आसियान केंद्रीयता और एकता" का सार बसता है। भारत के लिए हिंद-प्रशांत क्षेत्र का भौगोलिक दायरा अफ्रीका के पूर्वी किनारे से लेकर ओसियानिया (अफ्रीका के तट से लेकर जो अमेरिका तक फैला है), जिसके साथ पैसिफ़िक द्वीप के देश भी जुड़े हैं।

b. भारत इंडो-ओसन रिम एसोसिएशन (आईओआरए), ईस्ट एशिया समिट, आसियान डिफेंस मिनिस्टर्स मीटिंग प्लस, आसियान रीज़नल फोरम, बे ऑफ़ बंगाल इनिशिएटिव फॉर मल्टी-सेक्टरल टेक्निकल एंड इकोनॉमिक को-ऑपरेशन (बिम्सटेक), मेकांग गंगा इकोनॉमिक कॉरिडोर जैसी व्यवस्थाओं में सक्रिय भागीदार रहा है। इसके अतिरिक्त भारत इंडियन नैवल सिम्पोज़ियम का भी आयोजक है। फोरम फ़ॉर इंडिया-पैसिफ़िक आइलैंड्स को-ऑपरेशन (एफआईपीसी) के जरिए भारत पैसिफ़िक द्वीप के मुल्कों के साथ भी साझेदारी बढ़ाने की कोशिशों में जुटा हुआ है। इस क्षेत्र में भारत का व्यापार तेजी से बढ़ रहा है, इसके साथ ही विदेशी निवेश पूरब की ओर भेजा जा रहा है, जैसे जापान, दक्षिण कोरिया और सिंगापुर के साथ व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते और आसियान और थाईलैंड के साथ मुक्त व्यापार समझौते किए गए हैं।

c. इस क्षेत्र के लिए भारत के दृष्टिकोण को इसकी "ऐक्ट ईस्ट पॉलिसी" को बढ़ावा देने से समझा जा सकता है, जिसमें दक्षिणपूर्व एशिया के साथ आर्थिक जुड़ाव और पूर्वी एशिया (जापान, कोरिया गणराज्य), ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड के साथ-साथ प्रशांत क्षेत्र के द्वीप देशों के लिए रणनीतिक सहयोग की बात कही गई है. भारत हिंद-प्रशांत क्षेत्र को एक रणनीति या सीमित सदस्यों के समूह के रूप में नहीं देखता है. भारत इस क्षेत्र में सुरक्षा को बातचीत के माध्यम से बनाए रखे जाने, एक सामान्य नियम-आधारित आदेश, नौपरिवहन की स्वतंत्रता, बिना किसी रोक-टोक के वाणिज्य और अंतरराष्ट्रीय कानून के मुताबिक विवादों का निपटारा चाहता है। भारत हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समान विचारधारा वाले देशों के साथ मिलकर काम करने का पक्षधर है, जिससे नियम-आधारित बहुध्रुवीय क्षेत्रीय व्यवस्था का बेहतर प्रबंधन किया जा सके और किसी एक शक्ति को इस क्षेत्र या उसके जलमार्गों पर हावी होने से रोका जा सके (पंत 2021, पृष्ठ संख्या-25)।

d. उदाहरण के लिए, साउथ चाइना सी (एससीएस) में भारत ने हमेशा से नौपरिवहन और ओवरफ्लाइट की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने की ज़रूरत पर जोर दिया है। अब एक अधिक मुखर तरीका अपनाया जा रहा है, जिससे दक्षिण चीन सागर(एससीएस) को "ग्लोबल कॉमन्स" (पूरी दुनिया के सामान्य) घोषित किया गया है, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय कानून के मुताबिक़ "किसी तीसरे पक्ष के हितों को प्रभावित नहीं किया जाना चाहिए" और सभी विवादों का निपटारा किया अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार किया जाना चाहिए। दरअसल यह बीजिंग की ओर निर्देशित किए गए संदेश हैं। भारत हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नियम-आधारित, संतुलित और स्थिर व्यापारिक माहौल के समर्थन में हमेशा से रहा है। पारस्परिक लाभ को बढ़ावा देने वाली सतत गतिविधियों को लगातार प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इस संबंध में, भारत न्यू डेवलपमेंट बैंक और एशियन इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक में एक महत्वपूर्ण हिस्सेदार रहा है। यह भारत-प्रशांत में क्षेत्रीय मामलों के प्रबंधन में आसियान जैसे बहुपक्षीय संगठनों के लिए एक केंद्रीय भूमिका की अवधारणा को बल देता है।

e. भारत-प्रशांत क्षेत्र में अपने भागीदारों के साथ जुड़ना भारत के लिए एक ज़रूरत है, विशेष रूप से 2020 गलवान घाटी संघर्ष के बाद, चीन-भारत संबंधों में मुश्किल दौर आया. भारत अब मुद्दा-आधारित साझेदारी में विश्वास

करता है-और यह भारत-ऑस्ट्रेलिया-जापान, भारत-अमेरिका-जापान, भारत-ऑस्ट्रेलिया-इंडोनेशिया जैसे कई मंचों पर भारत की साझेदारी को बताता है, जो हाल के दिनों में तेजी से बढ़े हैं. तेजी से महाशक्ति बनते और आक्रामक होते चीन का सामना करते हुए, ऑस्ट्रेलिया, जापान और अमेरिका के साथ-साथ आसियान जैसे देश अपनी चीन संबंधी नीतियों पर पुनर्विचार और पुनर्मूल्यांकन कर रहे हैं। भारत, अपने क्वाड साझेदारों के साथ, हिंद-प्रशांत में अपनी भूमिका को बढ़ा रहा है। सितंबर 2019 के विदेश मंत्रियों की बैठक के बाद, क्वाड ने महत्वपूर्ण रूप से ख़ुद को आगे बढ़ाया है (सिंह 2019, पृष्ठ संख्या-57)।

f. यह केवल एक लोकप्रिय बहुआयामी मंच नहीं है और ना ही सिर्फ़ बड़ी-बड़ी बातें करने के लिए है। जुलाई 2020 में, भारतीय नौसेना ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में अमेरिकी नौसेना के साथ संयुक्त नौसैनिक अभ्यास किया, जिससे चीन को एक स्पष्ट संदेश गया। भारत और ऑस्ट्रेलिया ने जून 2020 में आपस में लॉजिस्टिक्स शेयरिंग समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं; जापान के साथ भी भारत ने सितंबर 2020 में म्यूचुअल लॉजिस्टिक्स शेयरिंग एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किए; भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका ने अक्टूबर 2020 में लंबे समय से लंबित बेसिक एक्सचेंज कोऑपरेशन एग्रीमेंट (बीईसीए ) को अंतिम रूप दिया; भारत, ऑस्ट्रेलिया और जापान ने चीन के प्रभुत्व का मुकाबला करने के मक़सद से और अंततः हिंद-प्रशांत में एक मज़बूत, टिकाऊ, संतुलित और समावेशी विकास प्राप्त करने के उद्देश्य से अप्रैल 2021 में एक आपूर्ति श्रृंखला पहल की शुरुआत की (ऑबजर्वर रीसर्च फ़ाउंडेशन 2022, पृष्ठ संख्या-11)। इसके अलावा, ऑस्ट्रेलिया ने भारत, जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ नवंबर 2020 में मालाबार अभ्यास में भाग लिया।

g. भारत आख़िरकार इस प्रस्ताव के साथ बड़े पैमाने पर हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समान विचारधारा वाले देशों के साथ काम करने की अपनी प्रतिबद्धता को दिखाता है और यह भी कि भारत जरूरत पड़ने पर सख़्त फैसले और रुख़ अख़्तियार करने से नहीं कतराएगा। यह क्वाड के साथ सैन्य शक्ति के जुड़ाव को दर्शाता है जब साल 2007 में पहली बार चारों मुल्कों ने साझा युद्धाभ्यास किया। जैसा कि क्वाड ने अपनी शक्तियों की नुमाइश शुरू की, और चीन के साथ भारत के संबंध तनावपूर्ण होते गए, नई दिल्ली ने अपने सहयोगी मुल्कों के साथ हिंद-प्रशांत क्षेत्र को लेकर रणनीति में भी भारी बदलाव किया। कोरोना महामारी को लेकर अब जबकि पूरी दुनिया नई चुनौतियों से निपटने में जुटी हुई है, यह भारत के लिए बेहद तार्किक है कि वो हिंद-प्रशांत क्षेत्र के मुल्कों के साथ चीन पर आर्थिक निर्भरता को कम करने के लिए एक वैकल्पिक सप्लाई चेन को बनाए, जिससे अपने ख़ुद के स्वास्थ्य ढांचा और रिसर्च एंड डेवलपमेंट को बढ़ावा दिया जा सके और जिससे अनुभव लेकर और बहुत कुछ सीखा जा सकेगा।

h. विदेश मंत्रालय (एमईए) के तहत हिंद-प्रशांत विभाग को इसके स्वाभाविक नतीजे के तौर पर तैयार किया गया है. चूंकि “हिंद-प्रशांत” की लगातार अहमियत बढ़ रही है तो अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे ताक़तवर मुल्क अपने क्षेत्रीय दृष्टिकोण को बता रहे हैं (इस शब्द को अपने आधिकारिक नीति में शामिल करने के अलावा), ऐसे में भारत के लिए अपनी हिंद-प्रशांत नीति को लागू करना ज़रूरी

है। यह एमईए विंग, हिंद-प्रशांत क्षेत्र के प्रति प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण को बताता है जो एकीकृत रणनीति को आईओआरए और आसियान क्षेत्र के अलावा क्वाड और हिंद-प्रशांत क्षेत्र की गतिशीलता के साथ जोड़ता है।

i. यह महत्वपूर्ण है कि नया विदेश मंत्रालय विभाग सुरक्षा और राजनीतिक मुद्दों से आगे बढ़े जिससे क्षेत्र के प्रति अधिक व्यापक नीति तैयार की जा सके। अगर भारत को अपने क्षेत्रीय जुड़ाव के लिए एक नई शुरुआत का फायदा उठाना है तो वाणिज्य और कनेक्टिविटी को प्राथमिकता देनी होगी। भारत ने हमेशा से हिंद-प्रशांत क्षेत्र के ढांचे में "समावेशी" अवधारणाओं को शामिल करने पर जोर दिया है, हालांकि सभी साझेदारों के हितों के बीच संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण होगा। जबकि हिंद-प्रशांत क्षेत्र की बात करने वाले इस बात को लेकर सहमत हैं कि इस क्षेत्र में नियमों का जोर हो लेकिन दृष्टिकोण और नीतियां (हिंद-प्रशांत क्षेत्र को लेकर दृष्टि या रणनीति) अलग-अलग हो सकती हैं। उदाहरण के तौर पर, भारत का दृष्टिकोण अमेरिका से बिल्कुल भिन्न है। लेकिन ऐसा लगता है कि हाल के वर्षों में भारत ने चीन का तन कर सामना करने के लिए अपने अतीत को भुला दिया है। हालांकि, जैसे-जैसे चीन और अमेरिका के बीच भू-राजनीतिक तनाव बढ़ता जा रहा है, भारत को अपने दीर्घकालिक रणनीति और आर्थिक हितों को ध्यान में रखते हुए अपने हिंद-प्रशांत नीतियों को सावधानीपूर्वक निर्माण करने की आवश्यकता है।

j. भारत की हिंद-प्रशांत रणनीति को प्रधानमंत्री मोदी ने 2018 में सिंगापुर के एक भाषण में सागर (एसएजीआर) सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया था। प्रधानमंत्री ने इसे "सिक्योरिटी एण्ड ग्रोथ फॉर ऑल इन द रिजन' के संदर्भ में प्रस्तुत किया था (भारतीय विदेश मंत्रालय 2021, पृष्ठ संख्या-12)। यह आकांक्षा इस क्षेत्र में 'एंड-टू-एंड सप्लाई चेन' हासिल करने पर निर्भर करती है। इस विचार में किसी एक देश पर निर्भरता न होकर सभी लाभार्थियों के लिए समृद्धि सुनिश्चित करना है। भारत के लिए हिंद-प्रशांत का विचार ऐसा है, जिसमें नियमों का पालन, नेवीगेशन की स्वतंत्रता, खुले संपर्क और सभी देशों की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिए सम्मान हो। भारत ने अपने इस सिद्धांत पर विषयगत और भौगोलिक पहल के माध्यम से काम भी किया है। इस क्षेत्र में सुरक्षा प्रदाता बनकर सुरक्षा और नेविगेशन की स्वतंत्रता को मजबूत करने की मांग की है। उपकरण, प्रशिक्षण और अभ्यास में पूरे क्षेत्र के देशों के साथ भागीदारी करते हुए मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए हैं।

k. मानवीय सहायता और आपदा राहत के क्षेत्र में भारत ने न केवल मजबूत क्षमताओं का निर्माण किया है, बल्कि खुद को एक विश्वसनीय मित्र के रूप में भी स्थापित किया है। 2019 में भारत और यू.के. द्वारा कोलीशन फॉर डिजास्टर रेसिलियेन्ट इंफ्रास्ट्रकचर (सीडीआरआई) गठबंधन किया गया था। कोविड-19 के शुरूआत में भी भारत ने रैपिड रेस्पोन्स मेडिकल टीम्स, खाद्यान्न, कोविड सामग्री आदि के माध्यम से इस क्षेत्र के देशों को बहुत सहयोग किया है। हिंद-प्रशांत के भूगोल को संभवतः अर्ध-वृत के रूप में वर्णित किया जा सकता है। सबसे नजदीकी अर्ध-वृत्त में हमारे निकटतक पड़ोसी देश हैं। ये सभी दक्षिण एशियाई देश हैं, जिन्होंने भारत के साथ हिंद महासागर के जल के अलावा सभ्यता और सांस्कृतिक विरासत की साझेदारी भी की है

(ऑबजर्वर रीसर्च फ़ाउंडेशन 2022, पृष्ठ संख्या-10)।

l. बाहरी वृत्त पश्चिम और दक्षिणपूर्वी एशिया में खाड़ी देशों और आसियान देशों को समाहित करता है। एक अर्थ में यह भी हमारे प्राचीन समुद्री संबंधों की फिर से स्थापना है। इसमें ऊर्जा और निवेश प्रवाह, श्रम और कौशल, व्यापार और व्यवसाय आदि भी जुड़ गए हैं। आगे बढ़ते हुए, भारत ने उन देशों के साथ साझेदारी की है, जिनके अवसर, सरोकार और हित हमारे साथ हैं। इसमें पश्चिमी हिंद महासागर के द्वीप समूह तथा अफ्रीका के पूर्व तटीय देश हैं। क्वाड, भारत जापान-अमेरिका, भारत-फ्रांस-आस्ट्रेलिया और भारत-इंडोनेशिया-आस्ट्रेलिया जैसे त्रिकोण और चतुर्भुज बने हुए हैं। इन सब सहयोग संबंधों के बीच आसियान देशों की साझेदारी केंद्रीय भूमिका रखती है। आसियन एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जहां विभिन्न हित आपस में मिल-बैठकर बातचीत कर सकते हैं, और मतभेदों को तर्कसंगत बना सकते हैं।

## 6. हिंद-प्रशांत क्षेत्र और भविष्य की चुनौतियां

a. हिंद-प्रशांत बहु-ध्रुवीयता और पुनर्संतुलन में चल रहे मंथन के केंद्र में है जो समकालीन परिवर्तनों की विशेषता है, जिसमें देशों के विचलन और पूरकता शामिल है और स्थिरता पर क्षेत्रीय दृष्टिकोण को जोड़ती है। जबकि क्षेत्र को महान शक्ति प्रतिद्वंद्विता द्वारा आकार दिया जा रहा है, महामारी ने सुरक्षा की धारणा पर संवाद को बदल दिया है। वैक्सीन कूटनीति, समान वितरण और चिकित्सा उपकरणों, परीक्षण किट आदि तक पहुंच ने राष्ट्रों को स्वास्थ्य सुरक्षा को राष्ट्रीय सुरक्षा के दायरे में शामिल करने के लिए प्रेरित किया है (जैश 2021, पृष्ठ संख्या-80)।

b. इस क्षेत्र ने महामारी के जवाब में क्वाड नीति की सोच में एक विकास देखा। क्वाड शिखर सम्मेलन 2021 ने '21 वीं सदी की चुनौतियों के लिए व्यावहारिक सहयोग' को आगे बढ़ाने के लिए अपनी पहल की घोषणा की (जोर जोड़ा गया); (i) सुरक्षित और प्रभावी टीकों के उत्पादन और पहुंच में वृद्धि करने सहित कोविड-19 महामारी को समाप्त करना; (ii) उच्च-मानक अवसंरचना को बढ़ावा देना; (iii) जलवायु संकट का मुकाबला करना; (iv) उभरती प्रौद्योगिकियों, अंतरिक्ष और साइबर सुरक्षा पर भागीदारी; और (v) उभरती प्रौद्योगिकियों, अंतरिक्ष और साइबर सुरक्षा पर भागीदारी; और (v) हमारे सभी देशों में अगली पीढ़ी की प्रतिभा को विकसित करना।

c. क्वाड द्वारा पहचानी गई चुनौतियाँ दीर्घकालिक सुरक्षा चुनौतियाँ है जिनके लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता होगी। वे उभरती सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए पारम्परिक सुरक्षा ज़रूरतों से भी आगे जाते हैं जो भविष्य में राष्ट्रों को प्रभावित करेंगे। क्वाड के हिस्से के रूप में, भारत ने सुरक्षा सोच में विकास का स्वागत किया है और 'दुनिया की फ़ार्मेसी' को महामारी को समाप्त करने के लिए आवश्यक टिके उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। महामारी अपने वर्तमान स्वरूप में वैश्वीकरण के भविष्य पर कई सवालों के साथ अभूतपूर्व आर्थिक चुनौतियां भी लेकर आई है। इसने देशों को लचीली अर्थव्यवस्थाओं के निर्माण के लिए अभिनव समाधान खोजने के लिए मजबूरकिया है। जो प्रतिस्पर्धी होने के साथ साथ महामारी की स्थितियों का सामना करने में सक्षम होंगे। संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) ने इंडो-पैसिफ़िक इकोनोमिक फ्रेमवर्क की भी घोषण की है जो व्यापार, डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं और टिकाऊ बुनियादी ढाँचे

और स्वच्छ ऊर्जा के निर्माण में मदद करेगा; सभी क्षेत्र जो भविष्य की अर्थव्यवस्थाओं के निर्माण में मदद करेंगे (परदेशी 2019, पृष्ठ संख्या-22)।

d. वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एक आम मुद्दा यात्रा प्रतिबंधों, सीमाओं को बंद करने और राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के परिणामस्वरूप वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं द्वारा सामना किए जाने वाले दबावों का सामना करना पड़ रहा था। मामलों में असमान वृद्धि और गिरावट के साथ, देशों ने प्रतिबंधों, लॉकडाउन आदि को जारी रखने के बारे में व्यक्तिगत नीतिगत निर्णय लिए हैं। उदाहरण के लिए, चीन की शून्य कोविड सहिष्णुता नीति के कारण लॉकडाउन जारी है। ऐसी स्थिति में विविधता लाने और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को परिवर्तन के प्रति लचीला बनाने की आवश्यकता स्पष्ट हो गई है।

e. एक और मुद्दा जिसने महामारी के दौरान महत्व प्राप्त किया, वह था मजबूत कनेक्टिविटी नेटवर्क बनाने की आवश्यकता। 'वर्क फ्रॉम होम'/'स्टडी फ्रॉम होम' व्यवस्थाओं ने व्यवसाय करने और शिक्षा प्रदान करने के लिए डिजिटल स्पेस का उपयोग बढ़ा दिया है। टेलीमेडिसिन परामर्श में वृद्धि के रूप में डिजिटल कनेक्टिविटी को बढ़ाने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला गया। जैसे-जैसे अर्थव्यवस्थाएं विकसित होंगी, डिजिटल सुरक्षा को बढ़ाने की इसी आवश्यकता के साथ डिजिटल कनेक्टिविटी की आवश्यकता बढ़ेगी (चटर्जी 2020, पृष्ठ संख्या-44)। कनेक्टिविटी का एक और महत्वपूर्ण कारक भौतिक कनेक्टिविटी को बढ़ाने की आवश्यकता बनी हुई है। पूरे क्षेत्र में माल और लोगों की निर्बाध आवाजाही समय की मांग बनी हुई है। हिंद-प्रशांत के प्रति भारत के दृष्टिकोण में अपने पड़ोसियों के बीच अंतर-संपर्क में अंतर को पाटने की आवश्यकता शामिल है। भारत ने बुनियादी ढांचे के विकास के लिए सहयोग की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है जो वस्तुओं और लोगों की आवाजाही की अनुमति देगा, जिससे देशों को अपने संबंधों को मजबूत करने में मदद मिलेगी।

f. जैसे-जैसे महामारी कम होने लगी है, क्षेत्रीय भू-राजनीति और नई चुनौतियों पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित किया जा रहा है जो आने वाले वर्षों में हिंद-प्रशांत को प्रभावित करेंगे। चीन के मुखर व्यवहार ने ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन और अमेरिका को शांति, लोकतंत्र, समृद्धि और नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के लिए साझा समर्थन के आधार पर अधिक सहयोग के माध्यम से समुद्री सुरक्षा बनाए रखने के लिए एक नया सुरक्षा गठबंधन, AUKUS बनाने के लिए प्रेरित किया है।

g. AUKUS गठबंधन का उद्देश्य 'एक सुरक्षित और अधिक सुरक्षित क्षेत्र प्रदान करने' के लिए काम करना है। इस क्षेत्र को रूस से बढ़ते हितों का जवाब देने की भी आवश्यकता होगी। इंडो-पैसिफिक अवधारणा को खारिज करते हुए, एशिया की ओर बढ़ने के रूस के प्रयास अधिक ध्यान आकर्षित करेंगे क्योंकि पश्चिम के साथ इसके संबंध बिगड़ रहे हैं और यह अपने सुदूर पूर्व क्षेत्र को विकसित करने पर ज़ोर देता है। यह देखा जाना बाकी है कि क्षेत्र के देश रूस के प्रस्तावों का जवाब कैसे देते हैं, जबकि वे किन, उनके मुख्य आर्थिक भागीदार और यू॰एस॰ए॰, उनके सुरक्षा भागीदार के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करते हैं।

h. यूक्रेन में चल रहे संघर्ष का भारत-प्रशांत में सुरक्षा पर भी प्रभाव पड़ेगा। संघर्ष का तत्काल प्रभाव देशों की खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा चिंताओं में दिखायी दे रहा है। इंधन की क़ीमतों में वृद्धि ने वस्तुओं की क़ीमतों में वृद्धि

की है। संघर्ष के परिणामस्वरूप कुछ खाधानों और उत्पादों की कमी क्षेत्र में ग़रीब और सीमांत समुदायों को प्रभावित करेगी।

7. संघर्ष से मुद्रास्फीति में परिणामी वृद्धि और महामारी की अंतर्निहित चुनौतियों के कारण आर्थिक सुधार धीमा हो गया है। विशेष रूप से इस क्षेत्र के लिए संघर्ष का एक और दुष्प्रभाव अफगानिस्तान से ध्यान हटाने का रहा है। जैसा कि युद्धग्रस्त देश अस्थिर बना हुआ है मानवीय सहायता पर निर्भर है और सत्ता के लिए क्षेत्रीय अंशों के साथ, भविष्य में इस क्षेत्र के लिए व्यापक सुरक्षा निहितार्थ होंगे। यूक्रेन में मौजूदा संघर्ष और अफगानिस्तान पर चीन और रूस द्वारा उठाए गए पिछले रुख से संकेत मिलता है कि ध्रुवीकरण यहां रहेगा। यह और तेज़ हो सकता है क्योंकि यूक्रेन में संघर्ष जारी है और यह क्षेत्र के देशों को प्रभावित करेगा।

## 8. निष्कर्ष

a. हिंद-प्रशांत क्षेत्र पिछले एक दशक में अंतर्राष्ट्रीय भू-राजनीति और भू-आर्थिक वातावरण में बदलाव के कारण बढ़े हुए फ़ोकस का क्षेत्र रहा है। यह प्रतिस्पर्धा और सहयोग के क्षेत्र के रूप में उभरा है। महामारी के कारण कई चुनौतियाँ और अवसरों को बढ़ाया गया है। जिसमें नियम आधारित आदेश की आवश्यकता, व्यापार और आपूर्ति श्रींखलाओं को फिर से संतुलित करना, बहुपक्षीय संस्थाओं की कमज़ोरियों को संबोधित करना और वैक्सीन इक्विटी शामिल है। इस क्षेत्र की तेज़ी से विकसित हो रही गतिशीलता के लिए समान विचारधारा वाले देशों को सहयोग बढ़ाने और स्थिर क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना के निर्माण के लिए साझेदारी को मज़बूत करने की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में भारत की अनूठी स्थिति है। इसके आकार, इसकी भौगोलिक स्थिति, इसकी क्षमताओं और हितों को देखते हुए, यह महामारी के बाद क्षेत्रीय और वैश्विक सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस दिशा में हिंद-प्रशांत के समान विचारधारा वाले देशों के साथ साझेदारी बनाना भारत-प्रशांत के लिए भारत की नीति का मूल मूल बना रहेगा।

b. जैसे हिंद-प्रशांत का प्रभुत्व बढ़ता है और प्रमुख क्षेत्रीय खिलाड़ी इस क्षेत्र के लिए अपनी रणनीतियों को स्पष्ट करते है, यह स्पष्ट हो गया है की भारत के साथ जुड़ने और स्वतंत्र, खुले और समावेशी हिंद-प्रशांत के दृष्टिकोण का समर्थन करने का इच्छुक है। साथ में उन्हें एक हिंद-प्रशांत आर्किकेक्चर का निर्माण करना होगा जो उभरती चुनौतियों का जवाब देने और क्षेत्र के देशों के दीर्घकालिक रणनीतिक और आर्थिक हितों की रक्षा करने में सक्षम हो। क्वाड देशों को क्षेत्र की शांति और स्थिरता के संदर्भ में समूह के दृष्टिकोण को स्पष्ट करने तथा क्षेत्र के अन्य देशों के बीच इसकी भूमिका और लक्ष्यों के संदर्भ में चीन द्वारा स्थापित मतभेदों को दूर करने का प्रयास करना चाहिये।

c. हिंद- प्रशांत क्षेत्र में भारत की कई अन्य देशों के साथ मज़बूत साझेदारी है, ऐसे में भारत द्वारा समान विचारधारा वाले अन्य देशों को इस समूह में शामिल करने की पहल की जानी चाहिये। स्वतंत्रता के बाद से ही भारतीय रक्षा नीति पूरी तरह थल शक्ति पर केंद्रित रही है, हालाँकि इसके बहुत बड़ा लाभ नहीं मिला है, ऐसे में यह सही समय है कि भारत को अपनी नौसैनिक शक्ति के विस्तार पर विचार करना चाहिये। वर्तमान में वैश्विक व्यवस्था में बदलाव के लिये उठी यह मांग रक्षा क्षेत्र तक ही सीमित नहीं दिखाई देती, उदाहरण के लिये अमेरिका की 'बाय अमेरिकन' (Buy American) और भारत की 'आत्मनिर्भर भारत' नीति इस बात का संकेत है कि शीघ्र ही वैश्विक व्यापार

के नियमों में भी बड़े बदलाव की आवश्यकता होगी। पूर्व के विपरीत वर्तमान में भारत के पास संसाधन, राजनीतिक इच्छाशक्ति और रणनीतिक बढ़त का एक महत्त्वपूर्ण अवसर भी है, ऐसे में वैश्विक व्यवस्था में बदलाव के लिये उसे आगे बढ़कर सामने आना चाहिये।

## 9. संदर्भ सूची


1. चौधरी, राहुल रॉय (2018), भारत, इंडो-पैसिफ़िक, और क्वाड, जर्नल ऑफ़ ग्लोबल पोलिटिक्स एंड स्ट्रैटजी, वॉल्यूम-60, नम्बर-3, पृष्ठ संख्या-181-194
2. पंत, हर्ष वी॰ (2018), क्या भारत इंडो-पैसिफ़िक के लिए तैयार है?, द वाशिंगटन क्वॉर्टर्ली, वॉल्यूम-41, नम्बर-2, पृष्ठ संख्या-47-61
3. परदेशी, मनजीत एस॰ (2019), इंडो-पैसिफ़िक : एक नया क्षेत्र अथवा इतिहास का पुनरावृति, आस्ट्रेलियन जर्नल ऑफ़ इंटरनेशनल अफेर्स, वॉल्यूम-74, नम्बर-2, पृष्ठ संख्या- 124-146
4. जैश, अमृता (2021), इंडो-पैसिफ़िक में क्वाड की भूमिका और भारत, जर्नल ऑफ़ इंडो-पैसिफ़िक, वॉल्यूम-4, नम्बर -2, पृष्ठ संख्या-78-85
5. सिंह, सिंदरपाल (2019), इंडो-पैसिफ़िक और भारत-यू॰एस॰ए॰ साझेदारी, जर्नल ऑफ़ एशिया पोलिसी, वॉल्यूम-14, नम्बर-1, पृष्ठ संख्या-77-94
6. कौरा, विनय (2020), इंडो-पैसिफ़िक और भारत की चतुर्भुज स्ट्रैटजी, जर्नल ऑफ़ नेशनल मेरीटाइम फ़ाउंडेशन ऑफ़ इंडिया, वॉल्यूम-5, नम्बर-2, पृष्ठ संख्या-78-102
7. राजागोपालन, राजेश (2020), भारत का इंडो-पैसिफ़िक स्ट्रैटजी, इंटरनेशनल अफेर्स, वॉल्यूम-96, नम्बर-1, पृष्ठ संख्या-75-93
8. ल्यू, रोजर (2018), इंडो-पैसिफ़िक में एक्ट ईस्ट नीति : भारत और क्वाड 2.0, प्रास्पेक्ट जर्नल, वॉल्यूम-19, नम्बर-1, पृष्ठ संख्या- 53-71
9. साहा, प्रेमेशा (2018), इंडो-पैसिफ़िक में क्वाड, ऑबजरबर रीसर्च फ़ाउंडेशन, URL: https://www.orfonline.org/wpcontent/uploads/2018/02/ORF_IssueBrief_229_QuadASEAN.pdf
10. साहा, प्रेमेशा (2022), भारत और क्वाड, जर्नल ऑफ़ ईस्ट एशियन पोलिसी, वॉल्यूम-14, नम्बर-3, पृष्ठ संख्या-17-30
11. पंडा, जगनाथ (2018), भारत का इंडो-पैसिफ़िक से संबंध और क्वाड, URL: http://hdl.handle.net/10125/59173
12. पंत, हर्ष वी॰ (2021), भारत और क्वाड, ऑबजर्रवर रीसर्च फ़ाउंडेशन, URL: https://www.orfonline.org/research/india-and-the-quad/
13. चटर्जी, मंजरी (2021), क्वाड, ऑकस और भारत की दुविधा, काउन्सिल आन फ़ॉरेन अफेर्स, URL: https://www.cfr.org/article/quad-aukus-and-indias-dilemmas